eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

दादाभाई नौरोजी के राजनीतिक विचार एक पुनरावलोकन

[1]सुदेश कुमार

[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, (माधव महाविद्यालय ग्वालियर) जिवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, म0प्र0

Received: 10 July 2022, Accepted: 20 July 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2022

Abstract

दादाभाई नौरोजी को सम्मानपूर्वक 'ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया' कहा जाता था। वो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखने वाले लोगों में से एक थे। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और तीन बार अध्यक्ष भी रहे। स्वराज (स्व–शासन) की मांग उनके द्वारा 1906 में एक अध्यक्षीय भाषण में सार्वजनिक रूप से व्यक्त की गई। प्रस्तुत शोध पत्र में दादाभाई नौरोजी के राजनीतिक विचारों का एक पुनरावलोकन प्रस्तुत करनें का प्रयास किया गया है।

संकेतशब्द– दादाभाई नौरोजी, अंग्रेजी राज, राजनीति, राजनीतिक विचार, स्वराज।

Introduction

दादाभाई नौरोजी का स्वदेश प्रेम उन्हें भारत ले आया। उस समय यहां अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कंपनी का राज था। ब्रिटिश सरकार ने अपनी छवि यह बना रखी थी कि वह भारत को तरक़्क़ी के रास्ते पर ले जा रही है, लेकिन दादाभाई नौरोजी ने तथ्यों और आंकड़ों से सिद्ध किया कि अंग्रेजी राज में भारत का बहुत आर्थिक नुकसान हो रहा है। भारत दिन–पर–दिन निर्धन होता जा रहा है। उनकी बातों से लोगों को यह विश्वास हो गया कि भारत को अब स्वतंत्र हो जाना चाहिए। वे पहले भारतीय थे, जिन्होंने कहा कि भारत भारतवासियों का है। उनकी बातों से तिलक, गोखले और गांधीजी जैसे नेता भी प्रभावित हुए।

द ग्रैंड ओल्डमैन आफ इंडिया के नाम से मशहूर दादा भाई नौरोजी ब्रिटिश संसद में चुने जाने वाले पहले एशियाई थे। संसद सदस्य रहते हुए उन्होंने ब्रिटेन में भारत के विरोध को प्रस्तुत किया। उन्होंने भारत की लूट के संबंध में ब्रिटिश संसद में थ्योरी पेश की। इस ड्रेन थ्योरी में भारत से लूटे हुए धन को ब्रिटेन ले जाने का उल्लेख था।

कांग्रेस का इतिहास लिखने वाले प्रो. एसआर मेहरोत्रा ने बताया कि नौरोजी अपनी वाक् कला से लोगों को अचंभित करते थे। वह जब ब्रिटिश संसद के लिए सदस्य चुने गए तो उन्होंने संसद में कहा, 'कि मैं धर्म और जाति से परे एक भारतीय हूं'। वह कहा करते थे कि जब एक शब्द से काम चल जाए तो दो शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

एक लिबरल के रूप में वह 1892 में हाउस आफ कामंस के लिए चुने गये। वे एक कुशल उद्यमी थे। 1939 में पहली बार नौरोजी की जीवनी लिखने वाले आरपी मसानी ने ज़िक्र किया है कि नौरोजी के बारे में 70 हज़ार से अधिक दस्तावेज थे, जिनका संग्रह ठीक ढंग से नहीं किया गया है। मेहरोत्रा के मुताबिक वेडबर्न डब्ल्यू सी बनर्जी और एओ ह्यूम की तरह दादा भाई नौरोजी के बिना कांग्रेस का

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

इतिहास अधूरा है। उन्होंने जो पत्र लिखे हैं उनका संग्रह और संरक्षण किया जाना ज़रूरी है। वे 30 जून 1917 को दुनिया को अलविदा कह गए। नौरोजी गोपाल कृष्ण गोखले और महात्मा गांधी के गुरु थे। नौरोजी सबसे पहले इस बात को दुनिया के सामने लाए कि ब्रिटिश सरकार किस प्रकार भारतीय धन को अपने यहां ले जा रही है। उन्होंने ग़रीबी और ब्रिटिशों के राज के बिना भारत नामक किताब लिखी।

एओ ह्यूम और दिनशा एडुलजी वाचा के साथ मिलकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का श्रेय उन्हें जाता है। वर्ष 1850 में केवल 25 वर्ष की उम्र में प्रतिष्ठित एलफिंस्टन इंस्टीट्यूट में सहायक प्रोफेसर नियुक्त हुए। इतनी कम उम्र में इतना सम्मानजनक ओहदा संभालने वाले वह पहले भारतीय थे। 1868 ई. में सर्वप्रथम दादाभाई नौरोजी ने ही अंग्रेज़ों द्वारा भारत के 'धन की निकासी' की ओर सभी भारतीयों का ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने 2 मई, 1867 ई. को लंदन में आयोजित 'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' की बैठक में पहली बार धन के बहिर्गमन के सिद्धान्त को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा– "भारत का धन ही भारत से बाहर जाता है, और फिर धन भारत को पुनः ऋण के रूप में दिया जाता है, जिसके लिए उसे और धन ब्याज के रूप से चुकाना पड़ता है। यह सब एक दुश्चक्र था, जिसे तोड़ना कठिन था।

दादाभाई नौरोजी 'धन के बहिर्गमन के सिद्धान्त' के सर्वप्रथम और सर्वाधिक प्रखर प्रतिपादक थे। 1905 ई. में उन्होंने कहा था कि "धन का बहिर्गमन समस्त बुराइयों की जड़ है और भारतीय निर्धनता का मुख्य कारण।" दादाभाई नौरोजी ने धन निष्कासन को 'अनिष्टों का अनिष्ट' की संज्ञा दी है।

दादाभाई कितने प्रखर देशभक्त थे, इसका परिचय 1906 ई. की कोलकाता कांग्रेस में मिला। यहाँ उन्होंने पहली बार स्वराज शब्द का प्रयोग किया। उन्होंने कहा, हम कोई कृपा की भीख नहीं माँग रहे हैं। हमें तो न्याय चाहिए।

परिकल्पना

दादाभाई नौरोजी के राजनीतिक विचार एक पुनरावलोकन के अन्तर्गत कतिपय निम्नलिखित परिकल्पनायें रेखांकित की जा सकती हैं–

1– दादाभाई नौरोजी नें राष्ट्रीय भावनाओं के जनक थे।
2– दादाभाई नौरोजी नें समानता और बंधुत्व के सिद्धांतों के कट्टर विश्वासी भी थे।
3– दादाभाई नौरोजी नें पहली बार स्वराज शब्द का प्रयोग किया।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में अनुसूची विधि और निरीक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त अध्ययन संबंधी द्वितीय तथ्यों को विभिन्न शोध प्रबंधों, गजेटियर, शोध पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों से

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

डेटा एकत्रित्र व प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया है। यह शोध–पत्र पुस्कालय अध्ययन पद्धति पर आधारित है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

दादाभाई नौरोजी कहते थे कि हम ब्रिटिश नागरिकों के समान हम अधिकारों का जिक्र नहीं करते हैं। हम स्वशासन चाहते हैं। उन्होंने भारतीयों के लिए तीन मांगे रखी। प्रथम भारतीयों को स्वराज्य पाने का अधिकार है। द्वितीय भारतीयों की उच्च सरकारी पदों पर अधिकाधिक नियुक्त हो। तृतीय भारत और इंग्लैंड के बीच न्याय पूर्ण आर्थिक संबंध रहे।

दादा भाई नौरोजी औपनिवेशिक स्वराज्य के समर्थक थे, स्वदेशी आंदोलन उनका ध्येय था, वे राष्ट्रीय शिक्षा के पक्षधर थे तथा विदेशी वस्तुओं के विरोधी थे। दादा भाई नौरोजी ने एक पुस्तक की रचना की जिसका नाम था निर्धनता और भारत में ब्रिटिश शासन। इस पुस्तक में उन्होंने बताया कि अंग्रेजी शासनकाल में भारत की स्थिति बड़ी दयनीय रही है। भारतीयों की स्थिति दासों की तरह थी। भारतीयों को लूट कर माल इंग्लैंड भेजा जाता था और यह लूटमार अनवरत जारी रही। राष्ट्र को सुधारने का मौका ही नही था। वह भारत और इंग्लैंड के मध्य न्याय उचित आर्थिक संबंध चाहते थे।

1890 के दशक के अंत और 1900 के शुरुआती दिनों में, ब्रिटिश शासन और क्रूर हो गया। अकाल और महामारी के कारण उपमहाद्वीप में लाखों लोग मारे गए, कई भारतीय राष्ट्रवादियों का मानना था कि उनके प्रयास अंतिम मोड पर पहुंच चुके थे। लेकिन नौरोजी ने उम्मीद नहीं छोडी। उन्होंने अपनी मांगो में वृद्धि करते हुए अधिक प्रगतिशील निर्वाचन क्षेत्रों, प्रारंभिक मजदूरों, अमेरिकी साम्राज्यवाद–विरोधी, अफ्रीकी–अमेरिकियों और काले ब्रिटिश आंदोलनकारियों को साथ लिया।

दादाभाई नौरोजी नें ऐलान किया कि भारत को स्वराज की जरूरत थी और यही देश से बाहर जाते धन को रोकने का जरिया था। ब्रिटिश प्रधानमंत्री हेनरी कैंपबेल–बैनरमैन से उन्होंने कहा कि यही उनके साम्राज्यवाद की गलतियों को सुधारने का तरीका है। ये शब्द और विचार दुनिया भर में घूमने लगे। उन्हें यूरोप के समाजवादियों ने, अफ्रीकी–अमरीकी प्रेस ने, भारतीयों ने और गांधी की अगुवाई में दक्षिण अफ्रीका के लोगों ने हाथों हाथ लिया।

स्वराज एक साहसिक मांग थी. मानव इतिहास के सबसे शक्तिशाली साम्राज्य से कमजोर अपना अधिकार कैसे ले सकते हैं? नौरोजी अपने आशावाद और कभी पीछे नहीं हटने वाली प्रवृति के साथ बने रहे। 81 साल की उम्र में अपने अंतिम भाषण में उन्होंने अपनी राजनीतिक असफलताओं को स्वीकार किया। उन्होंने कहा निराशा किसी भी दिल को तोडने और मायूस करने के लिए काफी है। यहां तक कि, मुझे डर है, विद्रोह करने से डर लगता है।

हालांकि, विचारों में दृढता, दृढ संकल्प और प्रगतिशील विचारों पर विश्वास ही सही विकल्प थे। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों से कहा, जैसे–जैसे कि हम आगे बढते हैं, हम ऐसे रास्तों को अपना सकते हैं। जो उस मोड पर उपयुक्त हों, लेकिन हमें अंत तक टिके रहना होगा।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

दादाभाई के विचारों का महत्व– आज एक सदी बाद, नौरोजी की भावनाएं बहुत सरल लग सकती हैं– लोक–लुभावनवाद, युगांतरकारी सत्तावाद और तीखे पक्षपात के युग में एक विचित्र रचनावाद सी लग सकती हैं। हमारा दौर बहुत अलग है। वर्तमान में ब्रिटिश संसद वो एशियाई सांसद भी हैं जिनका शाही इतिहास पर अस्पष्ट दृष्टिकोण है और ब्रेक्सिट को लेकर अडयिल रवैया भी हैं। ?

नौरोजी जिन्होंने अध्ययन के माध्यम से अपने राजनीतिक एजेंडे को आगे बढाया, नकली समाचार और तथ्यहीन जानकारियों के इस दौर में उनकी क्या राय होती, ये अंदाजा लगाना मुमकिन नहीं है। फिर भी नौरोजी की दृढता, प्रयास और प्रगति में विश्वास हमें आगे की राह तो दिखाते ही हैं। जब नौरोजी ने सार्वजनिक रूप से 1900 के दशक में स्वराज की मांग शुरू की, तो उन्होंने माना था कि इसे पाने में कम से कम 50 से 100 साल लगेंगे। तब ब्रिटेन अपने शाही चरम पर था और अधिकांश भारतीय स्वराज जैसे विचारों पर बात करने के लिए बहुत गरीब और पिछडे। नौरोजी आज यह जानकर स्तब्ध रह जाते कि उनके पोते एक स्वतंत्र भारत में रहे हैं और ब्रिटिश साम्राज्य के पतन के गवाह हैं।

इससे कई महत्वपूर्ण सबक मिलते है – साम्राज्य गिर जाते हैं, निरंकुश शासन खत्म हो जाते हैं, लोगों की राय अचानक बदल जाती है। नौरोजी के राजनीतिक विचार हमें दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देते हैं। वह हमें प्रगतिशील आदर्शों पर विश्वास बनाए रखने का आग्रह करते हैं और दृढ रहने के लिए कहते हैं।

दादाभाई नें स्वराज की ओर राजनीतिक सुधार को सही ठहराने के लिए भारतीय गरीबी और निष्कासन सिद्धांत पर उत्तरोत्तर जोर दिया। नौरोजी ने स्पष्ट राजनीतिक लक्ष्यों के लिए भारत की गंभीर आर्थिक वास्तविकताओं का इस्तेमाल किया। इसके लिए उन्होंने नौकरशाही के भारतीयकरण को सही ठहराया और अंततः स्वराज की प्राप्ति की दिशा में और ठोस कदम उठाए। नौरोजी ने कई रियासतों, विशेषकर गुजरात और काठियावाड की अदालतों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किए।

दादाभाई नें यह सिद्धांत दिया कि रियासतें धन की निकासी से कम प्रभावित थीं और परिणामस्वरूप, ब्रिटिश भारत की तुलना में आर्थिक रूप से अधिक मजबूत थीं। इसलिए, वे भारतीय राजनीतिक और आर्थिक सुधार में प्रयोगों के लिए प्रयोगशालाओं के रूप में काम कर सकते थे। इसलिए, दादाभाई ने भारतीयों की नई पीढयिों को प्रशिक्षित करने और उनमें आर्थिक और राजनीतिक तर्क द्वारा समर्थित राष्ट्रवादी चेतना पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

सन्दर्भ सूचीः–

1- Visana, Vikram (September 2016). "Vernacular Liberalism, Capitalism, and Anti-Imperialism in the Political Thought of Dadabhai Naoroji". The Historical Journal. 59 (3): 775–797. doi:10.1017/S0018246X15000230. ISSN 0018-246X. S2CID 155747116.
2- Raychaudhuri G.S. (1966). "On Some Estimates of National Income Indian Economy 1858–1947". Economic and Political Weekly. 1 (16): 673–679. JSTOR 4357298.

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

3- Ganguli B.N. (1965). "Dadabhai Naoroji and the Mechanism of 'External Drain'". The Indian Economic & Social History Review. 2 (2): 85–102. doi:10.1177/001946466400200201. S2CID 145180903.
4- Banerjee, Sukanya (2010) Becoming Imperial Citizens : Indians in the Late Victorian Empire Durham. Duke University Press; ISBN 978-0-8223-4608-1
5- Doctor, Adi H. (1997) Political Thinkers of Modern India. New Delhi Mittal Publications; ISBN 978-8170996613
6- Chatterjee, Partha (1999). "Modernity, Democracy and a Political Negotiation of Death". South Asia Research. 19 (2): 103–119. doi:10.1177/026272809901900201. S2CID 144967482.
7- Chandra, Bipan (1965). "Indian Nationalists and the Drain, 1880—1905". The Indian Economic & Social History Review. 2 (2): 103–144. doi:10.1177/001946466400200202. S2CID 143869246.
8- Chishti, M. Anees ed. (2001) Committees And Commissions in Pre-Independence India 1836–1947 Volume 2: 1882–1895. New Delhi Mittal Publications; ISBN 9788170998020
9- "Transactions of the Ethnological Society of London", p. 9
10- Bakshi, Shiri Ram (1988) Gandhi and Indians in South Africa. p. 37.
11- Pasricha, Ashu (1998) Encyclopedia Eminent Thinkers. Vol. 11: The Political Thought of Dadabhai Naoroji. Concept Publishing Company. p. 30. ISBN 9788180694912
12- "Dadabhai Naoroji's London and Bombay". Dinyar Patel. 5 May 2020. Retrieved 6 August 2022.
13- "Dadabhai Naoroji | Indian Nationalist and MP | Blue Plaques". English Heritage. Retrieved 10 August 2022.
14- "First Indian to win a popular election to the UK Parliament receives Blue Plaque". English Heritage. Retrieved 10 August 2022.